International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 11 Nov- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

धारणीय विकास में पर्यावरण नियंत्रण का योगदान

डॉ, सुनिल कुमार मंडल
सहायक प्राध्यापक
अर्थषास्त्र विभाग मोद नारायण कॉलेज अम्बा, षाहकुण्ड,
तिलका मॉझी भागलपुर विष्वविद्यालय भागलपुर

धारणीय विकास एक ऐसा विकास का माध्यम है जो कि आने वाले नये भावी पीढ़ियों की आव"यकताओं की पूर्ति की दक्षता से समझौता किये बिना वर्त्तमान और आने वाले भावी पीढ़ियों की हरेक आव"यकताओं की पूर्ति करने के लिए अपनी सोच को रखना पड़ता है जैसे कि नये नये संसाधनों को ढूंढ़कर संसाधनों को प्रयोग करना संसाधनों के संगत प्रयोग से भावी पीढ़ियों की आव"यकताओं की पूर्ति किसी से समझौता किये बिना पूरा किया जाना । धारणीय विकास कि अवधारणा पर संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण और विकास पर सम्मेलन में विषे"ा रूप से बल दिया गया हैं। धारणीय विकास का लक्ष्य है कि हम गरीबों की दरिद्रता को कम कर सके, सुरक्षित जीविका का साधन हो सके, जिससे कि संसांधन अपक्षय, पर्यावरण अपक्षय, संस्कृतिक और सामाजिक अस्थिरता को अधिक से अधिक कम हो सकें। धारणीय विकास का मतलब उस विकास से जुड़ा है जहाँ वि"ाष रूप से गरीब परिवारों की हरेक आव"यकताओं की पूर्ति और उनकी एक अच्छे जीवन की जीने के लिए रोजगार, भोजन, ि"ाक्षा, कृषि, आवास, सुरक्षा, चिक्तिसा, बिजली और पानी, गाँव हो या शहर में पक्की सड़के इत्यादी सेवाओं की वृद्धि को सुनि"िचत कर सकें। आज पर्यावरण पुरी दुनियाँ में प्रत्येक मनुष्यों को नवीकरणीय और गैर–नवीकरणीय इन दोनों प्रकार के संसाधनों को प्रदान करता है। अगर नवीकरणीय संसाधन की बात करें तो नवीकरणीय वो संसाधन है जो कि समय के साथ–साथ अव"यकताओं की पूर्ति करता है, और आने वाले भावी पीढ़ियों के लिए वि"ाष उपयोग किया जा सकता है। वहीं दूसरी गैर–नवीकरणीय वो संसाधन है जो खर्च हो जाने के कारण समय के साथ–साथ समाप्त भी हो जाता है, जैसे कि कोयला, गैस, बिजली, इंधन इत्यादी को रखा गया है। इन सारी आव"यकताओं की भावी पीढ़ियों को ध्यान में रखते हुए सावधानी पूर्वक इन ससाधनों का प्रयोग किया जाना चाहिए। इस प्रकार अनेकों ससांधन है जो कि आने वाले भावी पीढ़ियों के लिए अति आव"यक है। पिछले लगभग 100–150 वर्षो में धरती के अंदर के भंडार अत्यंत तेजी से घट रहा है। इसका मुख्य कारण मनुष्यों की जनसंख्या की बढ़ने से है। मनुष्यों की जनसंख्या बढ़ने के साथ–साथ हरेक संसाधनों की भी मांग बढ़ती जा रही है। इसलिए अब हमें अपनी सोच को बदलते हुए संसाधनों का उपयोग में नियंत्रण रखना चाहिए साथ ही साथ उस पर अल्प व्यय करना चाहिए। धारणीय विकास को व्यवधान पहुचाने में विकसित दे"ाों का अविकसित दे"ाों पर अनाव"यक राजनीतिक दवाब भी है। इसके तहत एक बार उपयोग में आने वाले संसधानों का निर्यात करने के लिए अविकसित दे"ाों को निर्यात करने लिए बाध्य करते है। अंततः कु"ाल प्रबंधन नीति के अभाव में एक बार उपयोग में आने वाले संसाधनों का दुरूपयोग होता है। जिससे भविष्य में उसके भंडार में कमी आती है। साधनों के आद"ा आवंटन अपनाकर क्षय हो जाने वाले साधनों के भंडार को बचाया जा सकता है।

आज हमारे समाज में धारणीय विकास को प्रोत्साहित किया जाय, पर्यावरण में सुधार लाया जाय, जिससे कि समाज में रहने वाले लोगों के पर्यावरण तथा जीवन को सुधारने में भरपुर मदद मिल सकें।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 11 Nov- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

विषय प्रवे"ा :– धारणीय विकास एक ऐसा विकास का माध्यम है जिससे कि आने वाले नये आजन्मी भावी पीढ़ियों की आव"यकताओं की पूर्ति की दक्षता से समझौता किये बिना आने वाले भावी पीढ़ियों की पूर्ति करने के लिए अपनी सोच को रखना पड़ता है। आज हमारे में ज्यादा तर लोग आर्थिक तंगी से भी जुझ रहा है। आर्थिक विकास का भी होना बहुत जरूरी है। आर्थिक विकास किसी प्रकार लोगों को जीने के लिए अपनी गुनवत्ता में सुधार सकता है। लोगों के लिए वस्तु और सेवाएं अपनी संतुष्टि के लिए किया जाता है। जैसे–जैसे संसाधन बढ़ रहा है वैसे वैसे लोगों की आव"यकता बढ़ती जा रही है। लोग को चाहे प्राकृतिक संसाधन हो या चाहे मनुष्य के द्वारा निर्मित संसाधन दोनों ही उतनी ही आव"यक है। अगर किसी वस्तु की अधिक मात्रा में उत्पादन होता है उतनी ही तेजी से खर्च भी होता जा रहा है। लोगों के लिए उत्पादन केवल संसाधनों का उपयोग तक ही सीमित नहीं, बल्कि उनके साथ अन्य समस्याऐं को भी जन्म दे रही है। जैसे अगर किसी फैक्ट्रियों से वस्तुओं की उत्पादन तो होता है, लेकिन उससे निकलने वाली धुआँ हमारे वातावरण में फैल कर वायु को प्रदूषित कर रहा है, जल को दूषित कर कर रहा है। कारण की फैक्ट्रियों से निकलने वाले रासायानिक युक्त दूषित जल, शहरों एवं महानगरों में नलियों का दूषित पानी सीधे नदियों में मल–मूत्र सहित सीधे नदियों में बहाया जा रहा हैं, जिससे नदियों की जल को दूषित कर रहा है, और हम लोग उसी पानी को सप्लाई के माध्यम से हमारे घरों में सीधे पहुचाया जा रहा है। आज पर्यावरण को प्रदूषित किया जा रहा है। इसके नियत्रण के लिए हम सभी को आगे आने की आव"यकता है। इसके लिए सरकार द्वारा गंगा नदियों या अन्य नदियों की सफाई के लिए 'नमामी गंगे' योजना को चलायी गई है, जिससे की हम सुरक्षित हो सके। आज तेजी से वनों का कटाव हो रहा है, जमीन को बंजर बनाया जा रहा हैं। वायु तथा जल प्रदूषित हो रहा हैं, ध्वनि प्रदूषित हो रही है। पृथ्वी के अंदर से तेजी से खनिजों को निकाला जा रहा है। जिससे भुकम्प जैसे आपदाएं आने का संकेत भी प्राप्त हो रहा है। साफ–साफ शब्दों में हम कह सकते है। कि हमारी धरती नष्ट हो रही है। और इस प्रकार पृथ्वी पर प्रकृति के साथ छेड़–छाड़ करने पर इस धरती पर जीवन यापन कर रहें प्राणियों का जीवन को बुरी तरह से प्रभावित कर रहा है। डीजल और पेट्रोल वाहनों की बढ़ती हुई संख्या और शहरीकरण से वायु–प्रदूषण हो रहा है, जो जन–खाध्य के लिए गम्भीर खतरा है।

1. <u>पर्यावरण प्रदुषण पर धारणीय विकास का प्रभाव</u>

पर्यावरण प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए धारणीय विकास की महत्वपूर्ण भुमिका है। धारणीय विकास यानी आने वाले नई भावी पीढ़ियों का विकास जिस प्रकार पर्यावरण संकट को दूर करने के लिए किसी हद तक कार्य करना पड़ता है। यह भी एक बहुत बड़ी गम्भीर समस्या सामने खड़ी हो जाती है। और इसे अतिआव"यक समझ कर एक उचित निर्णय लेने के लिए मजबूर हो जाते है। और विजय भी प्राप्त होता है। इसी धारणीय विकास के अर्थ को पुरी दुनियां को मान कर चलने की आव"यकता है। हम लोग यह भी जानते है। कि धारणीय विकास एक दीर्घकालीन अवधारण है जो कि आने वाले भावी पीढ़ियों के विकस के लिए एक महत्वपूर्ण आव"यकता जान पड़ती है। धारणीय विकास दे"ा हो या पूरी

दुनिया में किसी जगह रहने वाले लोगों को प्रभावित करता है। आज धारणीय विकास के लिए न कि केवल हमें सोचना चाहिए किन्तु पुरे वि"व को सोचना चाहिए उदाहरण के लिए अगर अमेरिका में लगे चालु फैक्ट्रियों से निकलने वाली धुआं हमारे दे"ा में वायु की गुणवत्ता को कम कर रही है, यानि प्रभावित कर रही हैं। अगर बंगलादे"ा में रासायनिक कीटना"ाक दवाइयों की छिड़काव की जाती है तो वह पच्चिमी बंगाल के समुद्र में पाये जाने वाले मछलियों को प्रभावित कर रहीं है, जिससे की हमारे दे"ा की स्टॉक को प्रभावित कर रही है। यानि व्यावसायियों में काफी कमी हो रही है। आज हमें धारणीय विकास की वैसी नीतियों पर बल देना चाहिए जिससे कि हमारा पुरा संसार समझ सकें। कुछ नीतियां तो अपने दे"ाों में केन्द्र सरकारों और राज्य सरकारों के स्तर से लागु किया जाना चाहिए। एक अहम बात तो यह है कि राष्ट्रीय स्तर केन्द्र स्तर हो या राज्य स्तर पर एक समन्वय स्थापित करना अति आव"यक है।

धारणीय विकास ही किसी संसाधन के प्रयोग"ाला विधि का एक स्वरूप है। जिससे कि पर्यावरण को सुरक्षित रखते हुए मनुष्य की हरेक आव"यकताओं की पूर्ति होती है। यह पूर्ति केवल वर्त्तमान समय के लिए ही नहीं कि जाती है बल्कि आने वाले आजन्मी भावी पीढ़ियों के लिए संयोग कर रखना पड़ रहा है। अधिकतर धारणीय विकास के बारे में परिभाषा देने वाले को अवर कामन फयूचर जिसे बंटलेण्ड रिपोर्ट भी कहा जाता है, इसी परिभाषा के अनुसार धारणीय विकास एक ऐसा विकास है जो कि भावी पीढ़ियों की आव"यकताओं की पूर्ति की क्षमता से समझौता किये बिना वर्त्तमान पीढ़ियों की हरेक आव"यकताओं की पूर्ति करें। धारणीय विकास प्रथम संसाधन हो या द्वितीयक संसाधन दोनों ही हमारे आने वाले नये आजन्मी पीढ़ियों के लिए अति आव"यक हैं। अगर हम वायु तथा जल को प्रदू"ात करते है और धरती के अंदर से प्राप्त होने वाले खनिज कोयला, प्राकृतिक गैस, सोना, हीरा, पैट्रोलियम इत्यादि की कमी होती जा रही है क्योंकि सारा संसाधन दूसरे दे"ाों को मिल रहा है। इससे आने वाले आजन्मी पीढ़ियों को कष्ट का सामना करना पड़ेगा। पूरे वि"व की संसाधनोंका भंडार केवल वर्त्तमान में जीवन काट रहें लोगों तक ही सीमित नहीं है बल्कि आने वाले भावी पीढ़ियों के लिए भी उतनी ही आव"यकता है, जितनी की वर्त्तमान समय में जी रहे लोगों के लिए है। आज यही कारण है कि वर्त्तमान समय की प्रत्येक आव"यकताओं की पूर्ति के लिए पर्यावरण का सही तरह से प्रयोग करने का उत्तरदायित्व हम सभी का है। हमारे मरने के बाद अपने बच्चों तथा भावी आजन्मी पीढ़ियों के लिए छोड़ जाते है, ताकि वे अपनी आव"यकताओं की पूर्ति कर सकें। धारणीय विकास इस बात पर केन्द्रित करता है आने वाले नये भावी पीढ़ियों को जीवन जीने के अधिकार से वंचित करने का कोई अधिकार नहीं है।

2. <u>पर्यावरण प्रदुषण पर नियंत्रण और धारणीय विकास</u>

पर्यावरण प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए धारणीय विकास की महत्वपूर्ण भूमिका है। पर्यावरण प्रदूषण का एक मुख्य कारण संसाधन भी है। बहुत से ऐसे संसाधन हैं, जिससे बहुत सारे संसाधनों का

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 11 Nov- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

जरूरत से ज्यादा प्रयोग किया गया, और साथ–साथ क्षय भी हो रहा है। आज जितना अधिक संसाधनो का प्रयोग किया जा रहा है। उतना ही तेजी से पर्यावरण संबंधी समस्या भी सामने खड़ी हो रही है। उदाहरण के लिए जैसे की जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण इत्यादि है। आज पर्यावरण संबंधी समस्याएँ तथा नियंत्रण निम्नलिखित है।

क. जल प्रदूषण :– जल प्रदूषण जल से उत्पन्न होने वाले अनेकों बीमारीयों जैसे की टायफायड, हैजा, कोलरा, डायरिया इत्यादी प्रदूषित जल में उपस्थित रोगाणुओं द्वारा पैदा होती है, जो कि इस धरती पर जीने वाले अनेकों जीव, मनुष्ययों, प"ाु पक्षी तथा जीव जन्तुओं को समान रूप से प्रभावति करती है। प्रदूषण जल के गुणों को प्रभावित करता हैं आज नदी, तलाब, पोखर, में मोहल्ले के नाले से बहने वाले अव"ोष्ठ पदार्थ जहरीली रसायनिक पदार्थो को भी शामिल किया जाता है। यह जहरीली रासायनिक पदार्थ में रहने वाले सारे जीवों जैसे मछली, पेड़ पौधा, पक्षी कीड़े मकोड़े, केचुआ इत्यादी मार देते है। इस प्रकार प्राकृतिक खाद्य पदार्थो में बाधा उत्पन्न होते हुए देखा जा रहा है। जल प्रदूषण का मुख्य स्त्रोत है:– मल उपचार संयंत्रों तथा शहर, लगर महानगर और गाँव मोहल्ले से मल–मूत्र पाइपों या नालियों के माध्यम से सीधे नदियों में बहाया जाना। बड़े–बड़े उद्योगों के द्वारा व्यर्थ जल में मिले रासायनिक पदार्थ को सीधे नदियों में बहाया जा जा रहा है।

ख. वायु प्रदूषण :– वायु प्रदूषण फैक्ट्रियों के रासायनिक पदार्थो के अव"ोष छोटे–छोटे कण अथवा जैव पदार्थो जो मनुष्यों अथवा अन्य जीव धारियों प्राणियों को हानि पहुचाने का काम या असुविधा का कारण बनते जा रहे है। साथ ही साथ इस प्रकृति पर हमारे वतावरण में प्रभाव पड़ रहा है। हमारे वातावरण को प्रदूषित करने वाले तीन जहरीले पदार्थ जैसे की कार्बन डायआक्साइड, कार्बन मोनोआक्साइड, नाइट्रोजन आक्साइड इत्यादि पदार्थो के कण सम्मिलित हैं वि"व स्वास्थ संगठन कथन के अनुसार प्रत्येक वर्ष लगभग 24 लाखों लोगों की मृत्यु का प्रत्यक्ष रूप से वायु प्रदूषण ही कारण है। प्रत्येक वर्ष पूरे संसार में मोटर गाड़ी दुर्घटनाओं की अपेक्षा सबसे ज्यादा वायु प्रदूषण से ही मृत्यु जुड़ी हुई है।

आज वायु प्रदूषण के कारण हैं। प्रत्येक मनुष्य जीव जन्तुओं, पेड़ पौधे, कीड़े–मकोड़े सभी प्रकार के जीवधरियों के स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा है, जिससे कि प्रत्येक जीव प्राणियों को सांस लेने में समस्याएँ उत्पन्न हो रही है। मनुष्य के अंदर स्वांस लेते समय घरघराहट आवाज निकलना, दम फुलना श्वसन तथा हृदय संबंधी अन्य समस्या शामिल किया जा सकता है। इन्हीं प्रभावों के कारण आज सरकारी या गैर–सरकारी अस्पतालओं में आपातकालीन विभागों में आने वाले मरीजों की संख्या में भी वृद्धि दिखती नजर आ रही है। इस प्रकार की भयानक दृ"य को देखना न पड़े इसके लिए हम सभी मानवजाति का दायित्व होता है। कि इस प्रकार की समस्या पर नियंत्रण करने

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 11 Nov- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

के लिए हम सभी प्रयासरती है। हम जानते है कि मानव की शक्ति पूरे वि"व में ऐसी कोई शक्ति नहीं जो कि समस्या को दूर करने में कोई बाधा डाल सके।

ग. ध्वनी प्रदूषण :— ध्वनि प्रदूषण भी मनुष्य अथवा जीव जन्तु के जीवन की प्रत्येक गतिविधियों के संतुलन को तीतर—वितर कर देती है। ध्वनि प्रदूषण अत्यधिक तथा अप्रिय पर्यावरण संबंधित ध्वनि है। आज मनुष्य के जीवन काल में अवांछनीय ध्वनि के रूप मं ध्वनि प्रदूषण मनुष्य के शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक तरिके से स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है। ध्वनी प्रदूषण मनुष्य को चिढ़चिड़ापन, तनाव स्तर बहरापन, बल्डप्रेसर उच्च रक्त चाप सहीं से नींद नहीं आना इस प्रकार और कई समस्याएँ मनुष्य के जीवन में आ रही है। अधिक देर तक ध्वनि का निकलते रहना बहरापन का ि"ाकार हो सकता हैं आज शादी विवाह में नये फै"ान के लिए डीजे यानी उची आवाज में म्यूजिक के साथ गानला को बजाना। इससे छोटे छोटे यानि आजन्मी बच्चे से लेकर बुढ़े वर्ग के लोगों को ध्वनि प्रदूषण प्रभावित कर रहा है। आज ये भी देखने के लिए मिल रहा है जो कि ध्वनि के साथ अपना व्यवासाय बना रखा है। व्यावसायिक ध्वनि में रहने वाले लोगों की ध्वनि संपर्क में न रहने वालों की तुलना में संवेदन"ीलता में अधिक कमी को महसूस करता है। आज उच्च तथा मध्यम श्रैणी की उच्च ध्वनि स्तर मनुष्य के हृदय गति की रक्त वाहिनियों पर प्रभाव और रक्त चाप तथा तनाव में वृद्धि को देखने मिल रहा है। इस प्रकार लोगों के पूरे जीवन काल में शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है।

3. धारणीय विकास में राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय प्रयास

धारणीय विकास की अवधारणा एक दीर्घकालीन अवधारणा है जो नये आजन्मी भावी पीढ़ियों के विकास को भी बराबर दर्जा देती हैं धारणीय विकास इस बात पर वि"ोष पर जोर देता है कि इससे पुरी दुनिया के किसी एक प्रांत में की गई कार्यवाही ओर उपायों का पुरी संसार के अन्य भागों में रहने वाले लोगों पर भी वि"ोष रूप से प्रभाव पड़ता हैं वर्ष 2016 के सितम्बर माह में संयुक्त राष्ट्र महा सभा ने वैि"वक धारणी विकास के लक्ष्य के 17 ऐसे मुद्दों को अपनाने के लिए ऐसी प्रतिबद्वता को दिखाया कि मानों सेकड़ों लक्ष्यों को रखें हों यही लक्ष्य इससे पहले कि मिलेनियम विकास लक्ष्य के रूप समझे जाने लगे। वास्तविकता तो यह है कि धारणीय विकास पूरे वि"व में मानवीय गरिमा, जैव मंडल, सुख समृद्धि के संरक्षण में हम लोगों की शांति और सुरक्षा को बेहतर से बेहतर बढ़ावा देने से जुड़ा है।

भारत के लिए इस प्राकर की चुनौतियों को स्वीकार करना बहुत ही जटील समस्या है। हमारे दे"ा की वि"ोष रूप से जो समस्याएँ है वो निम्नलिखित है— स्वास्थ्य की समस्या, ि"ाक्षा की समस्या, चिक्तिसा, खाद्यान, उर्जा, गरीबी, स्वच्छता, जलवायु में परिवर्त्तन, असमानता, भौतिक और रासायनिकों भी शामिल किया गया है। हमारे दे"ा के समाजिक और आर्थिक विकास के लिए यह एक बहुत ही बड़ा सुनहरा मौका है। धारणीय विकास की जो रूप रेखा है। भले ही कठिन है पर जरूरत तो पुरी दुनिया

को है। धारणीय विकास ऐसे में कुछ महत्वपूर्ण लक्ष्यों को पूरा करने का वरदान प्राप्त है। जैसे कि हम बात करे कि पुरी पुरी दुनियों के लिए जल, चिकित्सा, स्वच्छता, वायु, स्वास्थ्य, पर्यावरण में सुधार होने की जरूरत है तभी हम सभी को प्रयाप्त मात्रा में पोषण एवं अन्य लाभ मिल पायेगा। इसी प्रकार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्पादन की खपत को संतुलन बनाये रखने से किसी भी सामग्री जैसे उर्जा खनिज पदार्थ इत्यादि की खपत करने में भी कमी आयेगी साथ ही साथ प्राकृतिक तंत्र में भी सुधार लाने से स्थानीय पारिस्थितिकीय तंत्र में भी सुधार आने में सफलता मिलेगी।

नीति आयोग के अनुसार धारणीय विकास के 12वें लक्ष्यों की पूर्ति ही नहीं हो सकी, आकड़ा और धन दोनों की कमी हो रहीं हैं। धारणीय विकास के 13 वें लक्ष्यों को हासिल करना उतनी भी आसान नहीं है। हम लोगों को यह भी नहीं भूलना चाहिए कि धारणीय विकास का कार्य तो अपने लक्ष्यों पर काम करना है। इसको साथ देने के लिए पुरी दुनियां के मानवजाति के कल्याण के लिए एकजुटता हो कर प्रद"ान करना चाहिए। अलग–अलग योजना बनाकर केन्द्र से लेकर राज्य स्तर तक को बेहतर बनाया जा सकता है।

4. धारणीय विकास पर संस्थागत प्रयास और जन प्रयास का प्रभाव

धारणीय विकास के लिए संस्थागत प्रयास करने के साथ ही साथ जन प्रयास का भी होना अतिआव"यक है। धारणीय विकास में समाज सेवियों की अहम भूमिका रहती है। इसमें समाज सेवियों को बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। पूरी दुनियां के अनेकों दे"ाों का लक्ष्य 2030 तक पुरी दुनिया का दृ"य बदलने के उद्दे"य से धारणीय विकास के इस महत्वपूर्ण लक्ष्यो को अपनाया गया है। हमारा दे"ा ही नहीं बल्कि पुरी दुनिया के सभी दे"ाों में विकास के नाम पर मिलने वाली योजना समान रूप से मिल सके और आपस में एक भाई चारे का संबंध स्थापित करना आज हम धारणीय विकास के लक्ष्यों को जिस उद्दे"य से लेकर चल रहे है। इसकी पूर्ति के लिए सहन"ाीलता, निष्ठावान, अथक प्रयास साथ–साथ ढेर सारी आर्थिक रा"ा की मदद की जरूरत हैं। इसके लिए पुरी दुनिया के सभी दे"ाों के अथक प्रयास करना होगा। सभी दे"ाों के सामाजिक संगठनों और व्यक्ति वि"ोष से भी नये नये विचारों और अन्य योगदान की आव"यकता की कमी देखने को मिल रही है।

आज हमारा दे"ा भी इस धारणीय विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने की दौड़ में शामिल है। केन्द्र हो या राज्य सरकारों की अथक प्रयास से बहुत सी नीतियों एवं योजनाएं भी बनाई जा रही है। लक्ष्य जितना बड़ा होगा। सरकार के साथ जन सहयोग समाज सेवी संस्थान, व्यावासायियों को निहस्वार्थ भाव से सहयोग करने की आव"यकता है और किसी लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक ढांचा को भी तैयार किया जाना अतिआव"यक है। जैसा कि हम जानते है कि समाजिक विकास के लिए निजी क्षेत्र के योगदान की अहम भुमिका रहती है। धारणीय विकास की इस पवित्र यज्ञ में समाज के हर वर्ग के लोगों को अपनी–अपनी आहूतियों समर्पित करना चाहिए। अगुवायी दे"ाों से ज्ञान का अनुभव लेकर

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 14 Issue 11 Nov- 2024
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

अगर हम सरकार समाज के साझेदारी करने में सफल हो गए तो हमारे दे"ा की जो नारा है। सबका साथ सबका विकास के सपनों के साथ लक्ष्या को प्राप्त किया जा सकता है।

भारत में पर्यावरण नियंत्रण और धारणीय विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने का कार्य पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्त्तन मंत्रालय करता है। यह मंत्रालय केन्द्र सरकार को मॉडल एजेन्सी है। यह एजेन्सी झीलों नदियों, वनों, उद्योगों के नियंत्रण संबंधी कार्यकर्मो का क्रियान्वयन की स्थिति को नियंत्रित करती है। इसका लक्ष्य दे"ा के मानव और अन्य जीव जन्तुओं की स्वास्थ्य सुविधा को देखना तथा प्रदूषण को नियंत्रित करना और समय क्रम में उसका निवारण करना है। यह मंत्रालय 'संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनइपी) दक्षिण एि"ाया शहकारी पर्यावरण कार्यक्रम (एसएसीइपी), अंतर राष्ट्रीय एकृत पर्वत विकास केन्द्र (आईसीआइएमओडी) और संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण और विकास सम्मेलन (यूएनसीईडी), मॉडल एजेन्सी है। पर्यावरण से जुड़े मामलों में मंत्रालय सतत विकास आयोग (सीएसडी) तथा ग्लोबल इनभारोमेंट फैसिलिटी (जीइएफ), बहुपक्षिय संस्थाओं एि"ाया तथा प्रा"ाांत आर्थिक एवं सामाजिक परिषद एसकेप्ट तथा दक्षिण एि"ायाई क्षेत्रीय सहयोग संघ (दक्षेस) विदे"ाी क्षेत्रीय संस्थाओं के साथ भी समन्वय करता है। स्त्रोत www.moef.nic.in

दे"ा के जंगली वृक्षों, फलों तथा फलों के अध्ययन के लिए भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण वन एवं जलवायु परिवर्त्तन मंत्रालय के अधिक कार्य करता है। इसकी स्थापना 1890 ई0 से विभिन्न योजनाओं में कार्य करना पराम्भ किया। इसका मुख्य कार्य दे"ा पेड़ पौधों और जीव जन्तुओं की रक्षा करना तथा पर्यावरण संरक्षण की उपयाओं का खोज करना है। इस मंत्रालय के अधिन भारतीय प्राणी सर्वेक्षण के कार्य को गति देने के लिए वन्य जीव सर्वेक्षण अधिनियम 1972 को लागू किया गया, जिसका मुख्य कार्यालय कलकत्ता है, तथा इनका 16 क्षेत्रीय कार्यालय दे"ाों के विभिन्न भागों में सिथत है। भारतीय संरक्षण विभाग 19841 वल संसाधनों का अध्ययन करता है। जैव विविधता संधी 1992 रियोडीजेनेरियों में आयोजित पृथ्वी सम्मेलन में पारित समझौता का दस्ताविज है। इसे (सीबीडी) भी कहा जाता है। जिसके प्रमुख उद्दे"य है, 'जैव विविधता का संरक्षण इसके घटनों का सतत उपयोग तथा अनुवांि"ाक संसाधनों के होने वाले उचित एवं निष्पक्ष साझेदारी। 1994 में भारत द्वारा (सीबीडी) को अधिकार दिये जाने के बाद से किये संकल्पों को पूरा करने एवं संधी से अवसरों का लाभ उठाने के लिए कई एक विधायी प्र"ाासनिक एवं नीतिगत प्रणालियों को स्वीकार किया गया है। स्त्रोत www.moef.nic.in

इसके अलावे यूनेस्को के सुझाव पर जीव मंडल रिजर्व की स्थापना 1972–1974 जैव विविधता संरक्षण 1991–92, वन संरक्षण एवं वन जीव संरक्षण, वन जीव अपराध नियंत्रण ब्यूरों, केन्द्रीय प्राणी उद्यान प्राधिकरण 1972, राष्ट्रीय प्राणी उद्यान 1959, प्रौजेक्ट एलिफेंट 1991–92, राष्ट्रीय बाघ संरक्षण 2006 तथा प्रत्येक वर्ष 29 जुलाई को अंतरराष्ट्र बाघ संरक्षण के मनाए जाने की स्वीकृति दी गई हैं। इसके अलावे वायु प्रदूषण, घ्वनि प्रदूषण, कचरा नियंत्रण योजना, रासायनिक सुरक्षा, ई–कचरा प्रबंधन,

ठोस कचरा प्रबंधन 2016, प्लास्टिक कचरा प्रबंधन 2016, निर्माण एवं विध्वंस कचरा प्रबंधन 2016, प्लाईएस का उपयोग केन्द्र प्रायोजित योजना में किया गया है।

अंतर राष्ट्रीय स्तर पर भारत सरकार ने विभिन्न संधियों के भागीदार बनने को भी स्वीकार किया है, जैसे कचरा प्रबेधन के लिए वैसल संध 1989, हानि कारक, रासायनों तथा किटना”ाकों के प्रबंधन के लिए एसटारडेम्प संघी 2004, जिद्दी प्रदूषक तत्वों के प्रबंधन के लिए स्टॉक होने संधी 2004, पारा नियत्रण के लिए मीनमाता संधि 2009, भारत समेत 190 दे”ाों में खतनाक रासायनों के प्रबंधन के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 2006 में इस संधी को स्वीकार किया है। राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजना 1995, झील संरक्षण के अंतर्गत वर्त्तमान में चल रही 86 परियोजनाओं को स्वीकृत किया गया है। जलमय भूमि संरक्षण 1987 तथा रामसर संधि 1982 को भी राष्ट्रीय कार्य योजना के रूप में 26 रामसर योजनाओं को भारत सरकार ने स्वीकृति दी है। अंतरराष्ट्रीय सहयोग एवं सतत विकास के लिए ग्लोबल एनवायरनमेंट फैसिलिटी 1991 के तहत 183 दे”ाों ने एक दूसरे को वित्तीय सहायता एवं तकनीकी सहयोग मुहैया कराने की नीति को स्वीकार किया है।

निष्कर्ष

इस तरह राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर जीव जन्तुओं तथा पौधे के लिए पर्यावरण प्रदूषण की गंभीरता को भारत सहीत दुनियां के समस्त दे”ाों ने स्वीकार किया है। इसके तहत क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न प्राकर की प्रदूषणों को नियंत्रित करने के लिए सरकार तथा जन सेवी संस्थाओं के द्वारा प्रयास भी किये जा रहे है। इसमें सभी दे”ा वित्तीय एवं तकनीकी सहयोग प्रदान करते है। इस प्रकार दे”ा को गति”ाील सतत और व्यापक गति”ाील बनाने की आव”यकता है। यदि पर्यावरण को यदि यथावत छोड़ दिया जाय तो वह निरंतर लाखों वर्षो तक भी सहारा बन सकता है। मनुष्य आधुनिक प्रौधोगिकी की सहायता से पर्यावरण में जाने अजाने दूरगामी और और अपरिवर्त्तनीय बदलाव लाने की क्षमता को रखता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. भारत 2019 पेज न0 181 से 206।
2. भातीय अर्थव्यवस्था एस चांद एण्ड कम्पनी न्यू दिल्ली 2022।
3. भारत 2020।
4. भरतीय अर्थव्यवस्था ए एन अग्रवाल न्यू एज इंटरने”ानल प्रा0 लि0 न्यू दिल्लीं।
5- https://ciiblog.in
6- https://nios.ac.in